शिव को पूजेंगे या शिव से मिलेंगे
पूजन करेंगे या मिलन मनायेंगे ?

युग बीत गये शिव का आह्वान करते, भक्तों के हाथ थक गये घण्टे-घड़ियाल बजाते, बुद्धि थक गयी रोज-रोज उसके गीत गाते, परन्तु क्या उसके कानों में आवाज पहुँची ....? क्या भक्तों की सुनवाई हुई ....? प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी भक्तजन भावनापूर्वक व कामनापूर्वक रात जागकर शिवालयों में भजन-कीर्तन करेंगे। भक्त इसे अपना कर्त्तव्य भी समझते हैं और यह भी सोचते हैं कि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो भगवान नाराज न हो जायें .....।

क्यों मना रहे हैं प्रतिवर्ष शिवरात्रि ...?

गॉव-गॉव, शहर-शहर में शिवभक्त इस दिन शिव का व्रत रखते हैं, अपनी कई मनोकामनाएं रखते हैं, शिव-पूजन करते हैं और आरती भी करते हैं तथा रात में जागरण भी इसलिए करते हैं कि शिव उन्हें दर्शन देंगे ... । वे कुछ भी करते हैं लेकिन शिव तो आते नहीं। प्रसाद के रूप में भॉग खाते और नशा करते हैं। भला भगवान शिव जो पवित्रता का सागर है, सम्पूर्ण गुणों का भण्डार है, सांसारिक नशा क्यों करेंगे ....? यह नशा वास्तव में ईश्वरीय नशा है।

इस पर्व के मनाने के पीछे रहस्य यही है कि शिव स्वयं इस धरा पर आते है, मनुष्यों को देवता बनाने के लिए, वे यहॉ आते हैं युग बदलने के लिए, वे यहॉ आते हैं मनुष्य को विकारों से छुड़ाने के लिए। भारत में अनेक त्यौहार उनके आगमन व उनके दिव्य कर्त्तव्यों की याद में ही मनाये जाते हैं। शिव यहॉ आते हैं इसलिए उनकी याद में शिवरात्रि मनायी जाती है।

शिवरात्रि ही क्यों.....?

शिव का रात्रि से क्या संबन्ध है, थोड़ा-सा जान लें। यहॉ रात्रि, ये रोज होने वाली रात्रि नहीं, बल्कि जब इस सृष्टि पर सभी मनुष्यों के मन में अज्ञान का अन्धकार छा जाता है, उसे ब्रह्मा की रात्रि कहा जाता है और ज्ञान के सागर स्वयं ज्ञान सागर ही हैं। वे आकर मनुष्यों को ज्ञान-प्रकाश देते हैं जिससे ब्रह्मा की रात ब्रह्मा के दिन में बदल जाती है। तो भगवान शिव ज्ञान-प्रकाश लेकर अज्ञान की रात्रि में आते हैं, इसलिए इस यादगार त्यौहार को शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं।

शिवरात्रि ही शिव जयन्ति है -

क्योंकि शिव स्वयं आते हैं इसलिए शिव रात्रि को शिव-जयन्ति भी कहते हैं। यहॉ जयन्ति कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं कि शिव जन्म लेते हैं। वे तो निराकार व जन्म-मरण से न्यारे हैं। यहॉ यह बात स्पष्ट जान लेनी चाहिए कि जिन शिव की हम चर्चा कर रहे हैं वे शंकर नहीं हैं। शंकर तो उनकी रचना, सूक्ष्म शरीरधारी एक देवता हैं। तो निराकार शिव जन्म-मरण से न्यारे हैं, परन्तु वे आयेंगे कैसे? स्थूल देहधारियों की इस दुनिया में देह का आधार लिए बिना वे अपने दिव्य कर्तव्य कैसे करेगें? जन्म उन्हें लेना नहीं है तो .....

शिव अवतरित होते हैं -

शिव का इस धरा पर अवतरण होता है। वे दूसरे के तन का आधार लेते हैं। यह विचारणीय है कि सर्वशक्तिमान, सम्पूर्ण पावन परमात्मा शिव किसे अपना माध्यम बनायेंगे ....? भक्तों ने तो शिव को नन्दीगण पर सवारी करते दर्शाया है। परन्तु निराकार को तो चाहिए कोई साकार तन ..... और उनके योग्य तन है या माध्यम है, प्रजापिता ब्रह्मा का, जो कि सृष्टि के आदिकाल में स्वयं इष्टदेव श्रीकृष्ण थे। तो शिव परमधाम से उनके तन में अवतरित होते है। वे उनके द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान देते हैं और अपने दिव्य कर्त्तव्य सम्पन्न करते हैं। वर्तमान समय उनके दिव्य अवतरण का समय चल रहा है।

रात्रि जागरण क्यों .....?

भक्त तो नींद का त्याग करके जागरण करते हैं परन्तु परमपिता शिव तो आकर सबको अज्ञान की नींद से जगाते है। वे ज्ञान-अमृत बॉटते हैं। कोई उसका पान करके सदा के लिए जागृत हो रहे हैं तो कोई केवल उनके आने की राह में शिव रात्रि पर जागते हैं।

भगवान जगा रहे हैं -

त्यौहारों पर रात्रि जागरण तो युगों से करते आये। अब स्वयं भगवान शिव हम सबको सदा के लिए अज्ञान नींद से जगा रहे हैं। वे कहते हैं ... मेरे मीठे बच्चों स्वयं को पहचानो, मुझे पहचानो, मैं तुम्हारा परमपिता हूँ, मेरे पास आओ। मुझे मेरे द्वारा जानो और मुझ से मुक्ति व जीवनमुक्ति प्राप्त करो।

अब आप अपने से पूछें - क्या जागने का इरादा है? याद रहे कि यदि अब न जागे तो सोये ही रहेंगे ..... भगवान स्वयं बड़े प्यार से जगा रहे हैं। अब उनकी सुनो और अज्ञान की चादर फेंक कर खड़े हो जाओ .....।

ये समय शिव से मिलन मनाने का है -

जिसके पूजन में ही इतना आनन्द है, उसका मिलन कितना सुखकारी होगा। आप अवश्य सोचते होंगे कि जिसकी हम पूजा कर रहे हैं यदि वह मिल जाय तो .....!

वह मिलता अवश्य है यदि वह न मिलता होता तो भला उससे मिलन की इच्छा ही क्यों होती? उसके मिलन का अनुभव अवश्य ही अवर्णनीय होता होगा, तब ही तो तपस्वी अखण्ड तपस्या करते हैं।

विचार करो यदि वह आपसे मिलें तो ..... यदि वह इस समय स्वयं ही आपका आह्वान कर रहा हो तो ..... यदि अब उसके मन में आपसे मिलने की तीव्र उत्कण्ठा हो तो .....

तो यह मिलन अवश्य होता है। अनेक ब्रह्मा-वत्स उनसे मिलन का सुख प्राप्त कर चुके हैं। उसका मिलना खाली नहीं होता, बल्कि वरदानों से भरपूर करते हैं वे..... वे प्यार के सागर भी हैं.....सच्चा प्यार भी देते हैं वे, वे सुखों के सागर भी हैं..... दुख हर लेते हैं वे .....

आह्वान -

तो आपके परमपिता शिव स्वयं आपको बुला रहे हैं कि आओ मेरे बिछुड़े हुए प्यारे बच्चों आओ .....

हम भी आपका आह्वान करते हैं कि जिसकी तुम जन्म-जन्म भक्ति करते आये हो, वह धरा पर उपस्थित है, भक्ति का फल देने के लिए। आप भक्ति ही करते रहेंगे या उसका फल भी लेंगे .....?

तो अब अपने प्राणेश्वर परमपिता शिव से मिलें। उसकी पावन दृष्टि पाकर निहाल हो जायें। उसके द्वारा सत्य ज्ञान सुनकर अपने मन के अंधकार को दूर भगा दें। यही है शिवरात्रि की शुभ-संदेश ।

ओम शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com